रॉंग नम्बर वाली लौंडिया को जमकर चोदा- 2

“इस देसी सेक्स चैट कहानी में पढ़ें कि गाँव की एक देसी लड़की से मेरी बात होने लगी थी और हमारी बातें चूत चुदाई तक पहुँच गयी थी. उसके बाद क्या हुआ ? …”

Story By: mohd mokeem (mohdmokeem)
Posted: Friday, August 7th, 2020
Categories: जवान लड़की
Online version: रॉंग नम्बर वाली लौंडिया को जमकर चोदा- 2

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

रॉंग नम्बर वाली लौंडिया को जमकर चोदा-2

 यह देसी सेक्स चैट कहानी सुनें

इस देसी सेक्स चैट कहानी में पढ़ें कि गाँव की एक देसी लड़की से मेरी बात होने लगी थी और हमारी बातें चूत चुदाई तक पहुँच गयी थी. उसके बाद क्या हुआ ?

दोस्तो, एक बार फिर से आप सभी को मैं उस रॉंग नम्बर वाली लौंडिया की देसी सेक्स चैट कहानी के दरिया में नहलाने आ गया हूँ.

आपने अब तक पढ़ा था कि उस लड़की से फोन पर मेरी चुदाई की बातें होने लगी थीं. वो लंड चुत कहने और बोलने के लिए राजी हो गई थी.

अब आगे की देसी सेक्स चैट कहानी :

मैं- तो ठीक है. फिर आगे बढ़ें.
वो- हम्म … बोलो ?
मैं- क्या बोलूं ?
वो- वही … जो तुम बोल रहे थे.

मैं- हां तुम्हारी बुर गीली हुई ?
वो- क्या !
मैं- हां … मतलब जब मैं तुम्हारी चूचियों को चूसूंगा तो बुर गीली होनी है.
वो- वो तो होगा ही.

मैं- तब तुम क्या करोगी ?
वो- तुम जो भी करोगे, मैं बस तुम्हें करने दूंगी … और मैं कर भी क्या सकती हूँ.

मैं- क्यों नहीं कर सकती तुम … मेरे लंड को पकड़ सकती हो, उससे खेल सकती हो.
वो- अच्छा … और तुम क्या करोगे ?
मैं- मैं बस तुम्हारा साथ दूंगा.
वो- कैसे ?
मैं- तुम्हारी चुचियों को चूस कर लाल करने बाद तुम्हारी बुर को अपने हाथों से सहलाऊंगा.
वो- और क्या करोगे ?

अब उसकी बातों में मुझे उत्तेजना महसूस हो रही थी.

मैं- तुम्हारी बुर खूब सहलाने के बाद तुम्हारी सलवार की डोरी खोलूंगा और उसे उतार दूंगा.
वो- अच्छा फिर क्या ?
मैं- फिर क्या … सलवार को उतार कर तुम्हारी दोनों टांगों के बीच में बैठ जाऊंगा और …

इतना बोल कर मैं चुप हो गया. मैं उसकी उत्तेजना परखना चाहता था.
वो व्यग्रता से बोली- और … फिर क्या करोगे ?

उसकी भारी होती सांसों से लबरेज आवाज से ऐसा लग रहा था कि उसको भी मज़ा आने लगा है.

मैं- फिर मैं तुम्हारी टांगों को चूमते हुए तुम्हारी जांघ पर चूमते चूमते, तुम्हारी बुर पर पहुंच जाऊंगा.
वो- इसस्स …

उसके मुँह से ये आवाज़ सुनकर में खुद चौंक गया कि ये क्या हुआ … ये तो पूरी गरम हो

चुकी है. मैं जानबूझ कर चुप हो गया.
वो- और बोलो ना … फिर क्या करोगे.
इस बार वो एकदम बच्चे की तरह गिड़गिड़ाते हुए बोली थी.

अब मुझे वो पंच मारना था कि उसकी उंगलियां सीधे उसकी चुत पर पहुंच जाएं.

मैंने कहा- फिर रानी, मैं तुम्हारी बुर को चूम लूंगा.
वो- औ..और..
मैं- बस तुम्हारी बुर को चूमकर अपनी जीभ निकाल कर चाटूंगा और अपने होंठों से तुम्हारी बुर चूसना शुरू कर दूंगा.
वो- आंह … और …
मैं- तुम्हारी बुर को खूब चूसूंगा … तुम्हारी बुर को चूसते हुए तुम्हारी चुचियों को हाथों से मसल दूंगा.
वो- अह … हां … ऐसा ही करना.

इतना बोल कर वो चुप हो गयी.

मैं- क्या क्या … क्या बोला तुमने ?
वो- उह … कुछ नहीं.
मैं- नहीं … तुमने कुछ बोला था.
वो- नहीं … सच में मैंने कुछ नहीं बोला था.
मैं- ओके.

वो- और बोलो … और क्या करोगे ?
मैं- और फिर तुम्हें चोदूंगा.
वो- क्यों अपने लंड से मुझे खेलने नहीं दोगे ?

मैं- हां क्यों नहीं. मगर ये तो तुम बताओगी कि तुम मेरे लंड से कैसे खेलोगी ?
वो- तुम्हारे लंड को हाथ में लेकर मैं उसे सहलाऊंगी, उसे चूमूंगी … मुँह में भरके चूसूंगी.
मैंने कहा- आह जान … तब तो वाकयी मज़ा आ ज़ाएगा.
वो- हां ये तो है.

मैं- तो बोलो … कब मिल रही हो ?
वो- कब आ रहे हो ?
मैं- तुम जब कहो.
वो- अभी आ जाओ.
मैं- अभी कैसे आ सकता हूँ … मैं तो मुंबई में हूँ.

वो- तो कब आ रहे हो ?
मैं- आ तो जाऊं … पर क्या तुम मुझसे सच में मिलोगी ?
वो- हां.
मैं- पक्का !
वो- हां पक्का.

मैं- तो बताओ कैसे मिलोगी ?
वो- तुम पहले गांव आ जाओ, फिर बताती हूँ.
मैं- नहीं पहले बताओ … तुम अपना सही पता बताओ पहले.
वो- तुमको यकीन नहीं है कि मैंने सही पता बताया है.
मैं- हां.
वो- क्यों ?

मैं- क्योंकि मैं एक लड़का हूँ. फिर भी तुम्हें अपना ग़लत पता बताया तो तुम एक लड़की होकर सही पता क्यों बताओगी.

वो- तो चलो, पहले तुम अपना सही पता बताओ.
मैं- पहले तुम बताओ.
वो- नहीं मैं रिस्क नहीं लूंगी.

मैं- जब तुम अड्रेस बताने में रिस्क नहीं ले सकती … तो मुझसे क्या मिलोगी.
वो- नहीं … ऐसी बात नहीं है. मैं सच में तुमसे मिलना चाहती हूँ … मगर …
मैं- मगर क्या ?
वो- कहीं तुम मेरे ही गांव के ही निकले तो ?
मैं- तो क्या हुआ. तब तो और सही होगा हमें मिलने में आसानी होगी.

वो- देखो … मैं तुम्हें अपना सही पता बता रही हूँ … मगर प्लीज़ तुम चाहे जो भी हो, किसी से कुछ नहीं बोलोगे … वादा करो !
मैं- अरे यार … तुम भी हद करती हो. मैं किसी को क्यों बोलूंगा. मैं अपने पैर पर कुल्हाड़ी क्यों मारूंगा … क्या बात करती हो ?
वो- अच्छा ठीक है, तो सुनो तुम करछना जानते हो ?
मैं- हां … जानता हूँ.

वो- जानते हो … कैसे ?
मैं- वहीं मेरे भाई की ससुराल है.
वो- कहां ?
मैं- करछना में.
वो- करछना में कहां ?
मैं- बोरी मोहल्ला जानती हो ?
वो- हां.
मैं- वहीं मेरे भाई की ससुराल है.

वो- सच में !

वो खुश हो गयी.

मैं- हां.
वो- अरे यार मेरा घर भी वहीं है.

मैं भी अब खुश हो गया था- तुम्हारा घर कौन सा है ?
वो- बिल्लू पर्धन को जानते हो ?
मैं- हां वही, जिसके विपक्षी पार्टी वालों ने मार मार कर हाथ पैर तोड़ दिए थे.
वो- हां यार … तुम तो सब जानते हो.
मैं- मेरे भाई की ससुराल है … आना जाना रहता है.

वो- तुम्हारा गांव कहां है ?
मैं- मेरा घर कमला नगर में है.
वो- ये कहां है ?
मैं- फाफामऊ जानती हो ?
वो- हां हां जानती हूँ.
मैं- उसी के पास है.

वो- तो तुम्हारे भाई की शादी यहां कैसे हो गयी ?
मैं- कैसे हो गयी से क्या मतलब !
वो- मेरे कहने का मतलब … यहां तुम्हारी पहले कोई रिश्तेदारी थी … या फिर कैसे.
मैं- तुम आम खाओ ना … गुठली के चक्कर में क्यों पड़ी हो ?
वो- नहीं ऐसे ही.

मैं- वो सब छोड़ो. तुम बताओ तुम्हारा घर कौन सा है.
वो- बिल्लू पर्धन के घर के सामने वाला घर मेरा है.
मैं- ऊऊ हूओहू..

वो- क्या हुआ ?
मैं- तो तुम जमील के घर से हो.
वो- हां … तुम मेरे चचा को कैसे जानते हो ?
मैं- मेरे बारे में तुम अपने चचा से पूछो … अच्छे से परिचय करा देंगे.

वो- उन्हें कैसे जानते हो ?
मैं- यार उनकी जो किराने की दुकान है. वहीं मैं अक्सर जब तब जाता रहता हूँ … तो बैठता हूँ. वहां सिगरेट वगैरह मेरे लिए फ्री होती है.
वो- वो क्यों.

मैं हंस पड़ा … क्योंकि उसके चचा एक लड़की को सैट किए हुए थे और वो अक्सर उसी से मिलने के लिए मेरे भाई के साले की मदद लेते थे.

उसने मेरे हंसने की वजह पूछी … तो मैंने सच बता दिया.

वो- तो तुम्हारे भाई की ससुराल मुनीर के यहां है ?
मैं- हम्म … सही पकड़ी हो.
वो- अब सब समझ में आ गया.

मैं- क्या समझ में आ गया ?
वो- कि तुम्हारा नंबर मेरे फोन में कैसे आया ?
मैं- कैसे ?

वो- ये मोबाइल पहले मेरे चचा के पास था … उन्हीं ने तुम्हारा नंबर बिना नाम के सेव किया होगा.
मैं- चलो जो भी है, हम मिले तो सही.

वो- हां … तुम प्लीज़ मुनीर से कुछ मत बताना प्लीज़.
मैं- नहीं यार उससे बताने का सवाल ही नहीं उठता. वो सब छोड़ो … अब बोलो कैसे मिलना होगा ?
वो- होगा … जब सब कुछ पता हो ही गया तो बस अब तुम्हारे आने की देरी है.
मैं- ओके … चलो ठीक है. वैसे हमें अब सो जाना चाहिए, रात बहुत हो चुकी है.
वो- हां ठीक है.

मगर उस रात नींद कहां आने वाली थी रात भर उसको चोदने के ख्याल में डूबा रहा. मेरा लंड तो जैसे अकड़ रहा था. फिर मैं बिस्तर से उठा और उसके नाम की मुठ मारी और वापस आकर सो गया.

दोस्तो, आप तो जानते ही हो मुठ मारने के बाद नींद तो आ ही जाती है.

खैर अब मैं छुट्टी की जुगाड़ में जुट गया. मैंने छुट्टी के लिए बहुत कोशिश की, मगर छुट्टी मिल नहीं रही थी.

मैं यूं ही निकल आया.

उधर वो भी बार बार फोन कर रही कि कब आओगे. हर रात फोन पर चुदाई की बात कर करके मुठ मारे जा रहा था. मेरी हालत खराब हुई जा रही थी. इन दिनों मुझे जो भी देखता, वो यही कहता कि यार तुझे क्या हो गया है … तू आज कल बहुत दुबला पतला हुए जा रहा है … खाना पीना सही से नहीं खा रहा क्या ? पर क्या बताता उनको कि मुझे चुत की

भूख प्यास लगी हुई है.

एक दिन मेरे सेठ ने मुझसे वही सवाल किया, तो मैंने मौका अच्छा समझ उनसे बोला कि सेठ 10-15 दिन छुट्टी दे दो घर हो कर आ जाता हूँ … शायद तबीयत में सुधार आ जाए.

सेठ ने कुछ सोच कर बोला- ठीक है जाओ … मगर सिर्फ़ 10 दिन के लिए.

मैं खुशी से फूला नहीं समा रहा था मगर मैंने सेठ के सामने जाहिर नहीं किया.

अब मैंने उस लड़की गुड़िया को बताया कि मैं आ रहा हूँ. वो तो बहुत खुश हुई.
दो दिन बाद मैं गांव पहुंच गया. फरवरी का महीना था. गांव में हल्की हल्की ठंडी अभी भी थी. वो ठंडी का लास्ट महीना होता है.

उसे भी पता ही था कि मैं गांव पहुंच गया हूँ. उसने पूछा- कब आ रहे हो मेरे पास ?
मैंने कहा- डार्लिंग, अपनी बुर को झाड़ पौंछ कर तैयार रखो, मैं कल उसको अपने लंड से मिलाने आ रहा हूँ.
वो- मेरी बुर तो कब से तैयार बैठी है तुम्हीं हो कि देरी किए जा रहे हो.

मैं- बस रानी … अब इंतज़ार की घड़ियां खत्म हुईं समझो … लो मैं आ गया.
वो- जल्दी आओ.
मैं- हां … कल दिन में आ रहा हूँ.

फिर दोस्तो, वो घड़ी आ गई, जब दूसरे दिन मैं उसके गांव में पहुंच ही रहा था. रास्ते में था जब उसका फोन आ गया.

वो- हैलो … कहां हो !
मैं- तुम्हारे गांव में बस दाखिल होने वाला हूँ.

वो- किस तरफ़ से आ रहे हो ?
मैं- बाज़ार की तरफ से.
वो- उधर से आओगे तो पहले मुनीर का घर पड़ेगा.

मुनीर यानि मेरे भाई का साला.

मैं- हां तो क्या हुआ … वहीं तो जा रहा हूँ.
वो- नहीं … पहले तुम मेरे घर की तरफ आओ, मैं तुम्हें देखना चाहती हूँ.
मैं- देख कर रिजेक्ट तो नहीं करोगी ?
वो हंसी- हो भी सकता है.
मैं- अच्छा ! तब आना ही पड़ेगा.

वो- तो सुनो … तुम जो ईंट का भट्टा पड़ता है न … उधर से आओ.
मैं- ईंट का भट्टा … मतलब वो जो हाइवे पर एक्सप्रेस ढाबा है, उसके बगल वाले रास्ते से ?
वो- हां हां वहीं से.
मैं- यार उधर से मैं रास्ता नहीं जानता हूँ. मैं तो हमेशा बाज़ार की तरफ से ही आता जाता हूँ.

वो- अरे वो रास्ता सीधा मेरे घर के पास आता है. तुम सीधे आ जाओ.
मैं- ओके मैं आ रहा हूँ … फोन रखो.

अब मैं उसी रास्ते से अन्दर दाखिल हो गया और उसके घर के पास पहुंच कर उसको फोन किया.

वो- हैलो … कहां पहुंचे ?

मैं- तुम्हारे घर के पास.
वो- सच में ?
मैं- हां.
वो- कहां हो ?
मैं- रोड पर खड़ा हूँ. काली जींस और आसमानी नीले रंग की शर्ट पहने हूँ. लाल स्टिकर काली बाइक हीरो पैशन प्रो.
वो- ओके, मैं दरवाजे पर आ रही हूँ.

मेरी नज़र दरवाजे पर ही थी. दरवाजा खुला तो उसने सामने खड़ी होकर हाथों से ही इशारा किया. उसने भी ब्लू कलर का सलवार सूट पहना हुआ था. दूर होने की वजह से चेहरा तो साफ नहीं समझ में आया … हां मगर वो गोरी थी और चुचे बड़े बड़े थे. यूं ही देख कर अंदाज़ा लग गया था कि नाल चुदी हुई है, पर उससे क्या फर्क पड़ता है.

मैंने बाइक स्टार्ट की और वहां से निकल पड़ा. अब सीधे भाई के ससुराल में जा पहुंचा, जहां मेरे आने की खबर मैंने मुनीर को पहले ही बता दी थी. वहां पहुंचा … तो मेरी खातिरदारी हुई. पानी वगैरह पिया … कुछ इधर उधर की बातें हुईं … हाल खबर पूछा, बताया गया.

फिर मैं मुनीर के वहां से निकल कर गुड़िया के चचा की दुकान पर आ गया. उनसे भी मुलाकात हुई. एक सिगरेट लेकर जलाई, कश लगाया … फिर फोन निकाल कर देखा … तो उसके 10-12 मिस कॉल पड़े थे.

वो मैंने मोबाइल साइलेंट मोड पर लगा दिया था … क्योंकि पता था फोन तो आना ही था और मैं नहीं चाहता था कि वहां सबके सामने इतने फोन आएं.

खैर मैं फोन को अनलॉक कर ही रहा था कि तभी वापस से फोन आने लगा.

मैं- हैलो..
वो- कब से फोन कर रही हूँ … उठा क्यों नहीं रहे हो ?
मैं- पागल हो क्या. वहां मुनीर के घर वालों के सामने फोन उठा कर क्या बोलता में ! वो सब छोड़ो, कब और कैसे मिलोगी … ये बताओ ?
वो- आज शाम को दिन ढलने के बाद मेरे घर के बगल से जो गली गयी है.
मैं- हां तो.
वो- तो क्या ! उसी गली में आ जाना.
मैं- रिस्क तो नहीं है ना ?
वो- कोई रिस्क नहीं होगा … मैंने सब सोच समझ कर ही बुलाया है. तुम बस टाइम पर आ जाना.
मैं- ठीक है जब टाइम हो जाएगा तो कॉल करना.
वो- ओके.

फिर जैसे आज शाम तो हो ही नहीं रही थी. मैं बार बार घड़ी देख रहा था कि और कितना टाइम बाक़ी है.

आख़िर वो समय आ ही गया, जिसके लिए मैं इतने दिनों से बेचैन था. जैसे शाम का अंधेरा होने वाला था, उसका फोन आ गया. मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा.

मैं- हैलो !
वो- कहां हो ?
मैं- आंवले के बगीचे में क्रिकेट खेल रहा हूँ.
वो- वो छोड़ो … आ जाओ दूसरा खेल खेलते हैं.
मैं- ओके.

वो- कितना टाइम लगेगा ?

मैं- वो तुमको भी पता होना चाहिए, वहां से तुम्हारे घर तक आने में कितना समय लगता है.
वो- पांच मिनट.
मैं- हां तो उतना ही लगेगा.

वो- निकल गए हो कि अभी वहीं हो !
मैं- निकल गया हूँ. अब मैं वो जो पुराना घर है न … गिरा टूटा हुआ है … वहां पहुंच गया हूँ.
वो- बड़ी तेज़ आ रहे हो.
मैं- और नहीं तो क्या … तुम्हें चोदना जो है.

वो- अच्छा ठीक है सुनो, तुम ना सीधे गली में जाना और वहां मेरे घर के लास्ट में रुक जाना. फिर मैं आ जाऊंगी.
मैं- उंहह ये क्या है … तू पहले वहां पहुंच ना.
वो- जानू प्लीज़ समझा करो, मैं पहले नहीं आ सकती. तुम पहुंचो, मैं तुरंत आती हूँ.
मैं- मैं पहुंच गया हूँ.
वो- क्या ?
मैं- हां बस तेरे घर के सामने हूँ गली में घुसने जा रहा हूँ.

इतना सुनते ही उसने फोन रख दिया. मैं उसकी बताई जगह पर आ कर खड़ा हुआ. फिर पीछे मुड़ कर देखा, तो किसी के आने की आहट मिल रही थी. उस गली में अंधेरा ज्यादा था, समझ नहीं आ रहा था कि आने वाला कौन है. मुझे डर भी लग रहा था.

इस रॉंग नम्बर वाली लौंडिया की चुदाई में मुझे लगने लगा था कि कहीं ठुक पिट न जाऊं. तब भी लंड की सुरसुरी इतनी अधिक थी कि उसकी चुत चोदने की लालच मन से निकल ही नहीं पा रही थी.

अगली बार लिखूंगा कि उस रॉंग नम्बर वाली लौंडिया की देसी सेक्स चैट कहानी कैसे आगे बढ़ी. आप मुझे मेल करना न भूलें.

mohdmokeem983@gmail.com

देसी सेक्स चैट कहानी जारी है.

Other stories you may be interested in

रॉंग नम्बर वाली लौंडिया को जमकर चोदा- 1

फ्री चैट गर्ल स्टोरी में पढ़ें कि कैसे मुझे एक लड़की मिसकाल करती थी. जब मैंने उसे फोन किया तो उसने बातें करनी शुरू कर दी. कामुकता भरी बातों का मजा आप भी लें. दोस्तो कैसे हो आप सब ! एक […]
Full Story >>>

ब्वॉयफ्रेंड से झांट साफ़ करा के चुत चुदाई

इंडियन हनीमून सेक्स स्टोरी में पढ़ें कि मैं अपने चोदू यार के साथ मसूरी में हनीमून मना रही थी. मेरे यार ने मेरी गांड मारी थी तो दर्द कर रही थी. तो मैंने क्या किया ? दोस्तो, कैसे हो आप सब […]
Full Story >>>

एक दिल चार राहें- 24

फ्री सेक्स Xxx स्टोरी में पढ़ें कि मैं होटल में अपने ऑफिस की लड़की की चुदाई कर रहा था. मैं उसकी गांड मारना चाहता था. मैंने उसकी गांड के गुलाबी छेद पर उंगली भी फिराई पर … नताशा शांत लेटी […]
Full Story >>>

लंड की प्यासी मेरी अकाउंटेंट के लिए मेरी कल्पना

एक बार मैंने अपनी ऑफिस अकाउंटेंट को दो मर्दों से कार में चुदती देखा. तो मेरा मन भी उसकी चुदाई को करने लगा. मगर मोटा होने के कारण मैं सेक्स नहीं कर पाता था. फिर मैंने क्या किया ? अंतर्वासना के […]
Full Story >>>

एक दिल चार राहें- 23

हॉट गर्ल सेक्स स्टोरी में पढ़ें कि कैसे मैं अपने ऑफिस की शादीशुदा लड़की को होटल में चोद रहा था. हम दोनों इस चुदाई का खूब मजा ले रहे थे. आप भी आनन्द लें. मैंने अपने एक हाथ से उसके […]
Full Story >>>